नवभारत

मार्गदर्शन बजाज फाउंडेशन के अध्यक्ष हरिभाई मोरी ने कहा, कार्यशाला में दी जा रही जानकारी

समय के साथ फसल तकनीक को बदलना जरूरी

■ **वर्धा,** ब्यूरो. बजाज फाउंडेशन और विश्व युवक केन्द्र की ओर से सेवाग्राम स्थित बापू कुटी के यात्री निवास में 'कृषि-उद्यमिता और जल संसाधन प्रबंधन' विषय पर चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला में 15 राज्यों से 100 सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया है. सत्र में बजाज फाउंडेशन के अध्यक्ष हरिभाई मोरी ने कहा कि 'छोटी भूमि मुद्दा नहीं है. हमें फसल प्रथाओं को बदलने की जरूरत है ताकि छोटे भूमिधारक भी अपनी आजीविका चला सकें' हमें सामूहिक कार्य करने की आवश्यकता है. सरकार, निजी संस्था संगठन और ग्रामीणों को संयुक्त प्रयास करना चाहिए. इसके लिए सामाजिक संस्था को इसे आंदोलन के रूप में लेना चाहिए. सरकार की भागीदारी से किए जाने वाले जल प्रबंधन के कार्य की जानकारी दी. सत्र में हेमन्त सिंह चौहान ने प्राकृतिक खेती से उत्पादित कृषि उत्पादों के आउटलेट नागपुर नेचुरल के बारे में जानकारी दी कि उनकी यात्रा कैसी रही और इस बात पर जोर दिया कि प्रत्येक किसान को अपने उत्पादों का विपणन करने का कौशल विकसित करना चाहिए.

खेती करते समय प्राकृतिक संतुलन पर दें ध्यान

पितांबर घुमड़े ने फार्मर्स प्रोड्यूसर्स कंपनी के बारे में बताया कि किसान कंपनी तभी आगे जा सकती जब आपका उद्देश्य साफ हो. उन्होंने क्रिशोन्नती फार्मर्स प्रोड्यूसर्स कंपनी के सफर के बारे में बताया कि यह एक प्रक्रिया है और आपको इसमे समय देने की जरूरत है. प्राकृतिक खेती करने वाले देवली तहसील के युवा किसान अक्षय सिंगरुप ने कहा कि खेती करते समय प्राकृतिक संतुलन पर ध्यान देना जरूरी है और इस संबंध में प्राकृतिक खेती का लाभ उनके परिवार को कोरोना काल मे कैसे मिला ये बताया. गांव स्तर पर प्रक्रिया उद्योग की जरुरत है इस विषय का मार्गदर्शन करते हुये कच्छी घानी तेल प्रक्रिया उद्योग चलाने वाले युवा किसान सच्चिदानंद तलवेकर ने बताया कि कैसे उन्हाने तेल घाणी उद्योग सुरू किया और उद्योगपती बन गये है. इसी तरह बाकि किसान अपने उत्पाद पर प्रकिया उद्योग शुरू करके आगे जा सकते है.

प्रतिनिधियों के लिए अभ्यास दौरा

बजाज फाउंडेशन की ओर से वर्धा जिले में हुए कृषि विकास और जल व्यवस्थापन गतिविधियों पर क्षेत्र का दौरा आयोजित किया गया. प्रशिक्षण कक्षा में सीखे उसको अपनी आंखों से खुद प्रत्यक्ष रुप से देखने का अवसर दिया. प्रशिक्षण के दूसरे दिन रेहकी गांव मे प्राकृतिक खेती करने वाले संजय घुमड़े के खेत पर क्षेत्र भेंट दी गई. घुमड़े ने प्राकृतिक खेती के बारे में तकनीकी जानकारी दी. अपनी खेती के उत्पादन और उसके विपणन के बारे में बताया.

किसानों ने अपने अनुभव किए बयान : सालई कला गांव के इंदिरा स्कूल में बच्चों ने किये डिजाइन फॉर चेंज प्रकल्प के अंतर्गत किये गये प्रकल्प को भेंट दी. इसमे बच्चों ने उनके अनुभव बताये. जलव्यवस्थापन कार्यक्रम के अंतर्गत सालई कला गांव में बनाए गये सीमेंट बांध और नदी पुनर्जीवन प्रकल्प को भेंट दी. भेंट में सालई कला गांव के किसानों ने अपने अनुभव कथन किए. कैसे पहले पानी के अभाव से कम फसल आती थी. या कभी बरबाद भी हो जाती थी. पर अब परिस्थिति बदल गयी है. हम तीन फसल लेते है. साथ में हमारे कुएं के पानी का स्तर ऊपर आ गया है.